

भारत के लोहा एवं इस्पात उद्योग में लाभदायकता विप्लेशण

डॉ. हरीश कुमार अग्रवाल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय,
ग्वालियर, (म.प्र.)

ब्रज मोहन बंसल
सहा. प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग
अम्बाह स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, अम्बाह (म.प्र.)

शोध सांराश

लोहा एवं इस्पात उद्योग किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के विकास हेतु एक आधारभूत उद्योग है, इस उद्योग के विकास द्वारा अर्थव्यवस्था को गति प्रदान की जा सकती है, परन्तु भारत में लोहा एवं इस्पात उद्योग में अपेक्षित विकास नहीं हो पाया है। देश के भावी विकास हेतु इस उद्योग के विकास की असीम सम्भावनाएँ विद्यमान हैं, इस उद्योग के न्यून विकास का प्रमुख कारण इस उद्योग में निम्न लाभदायकता का होना रहा है अतः प्रस्तुत शोधपत्र में शुद्ध सम्पत्ति के आधार पर चयनित इस उद्योग की इकाईयों की लाभदायकता का विश्लेषण प्रमुख अनुपातों के आधार पर किया गया है। शोध अध्ययन के द्वारा यह पाया गया कि इस उद्योग की लाभदायकता में कड़े वित्तीय नियन्त्रण द्वारा वृद्धि की जा सकती है।

लोहा एवं इस्पात उद्योग किसी भी देश के औद्योगिक विकास का आधार होता है। यह एक आधारभूत उद्योग है जिस पर अन्य सभी उद्योगों का विकास निर्भर होता है। औद्योगिक विकास के लिए मशीनों एवं बड़े-बड़े यन्त्रों की आवश्यकता होती है जिसकी पूर्ति इसी उद्योग की सहायता से की जा सकती है। किसी भी देश के लिए इस्पात उद्योग औद्योगीकरण की आधारशिला के रूप में होता है। इसलिए इस्पात उद्योग को अन्य समस्त उद्योगों का जनक कहा गया है। स्वतन्त्रता के बाद में, तथा विशेष रूप में नियोजन काल में, इस उद्योग का यद्यपि पर्याप्त विकास किया गया है तथा सार्वजनिक क्षेत्र में इस्पात के अनेक विषाल कारखानों की स्थापना विदेशी सहयोग के बल पर की गयी है। किन्तु आज भी अन्य विकसित देशों की तुलना में भारत का इस्पात उत्पादन केवल 1 प्रतिषत है। वस्तुतः विकासशील देश जिनकी संख्या 100 से अधिक है और जिनमें कुल विष्व जनसंख्या का तीन-चौथाई भाग निवास करता है, कुल मिलाकर विष्व के इस्पात उत्पादन का केवल 20 प्रतिषत इस्पात ही उत्पादित करते हैं। शेष 80 प्रतिषत इस्पात का उत्पादन विष्व के दस बड़े देशों के द्वारा किया जाता है। जबकि विष्व की जनसंख्या की एक-चौथाई जनसंख्या ही इन देशों में निवास करती है।

यह एक विडम्बना ही कही जायेगी कि बहुत से ऐसे देश भी हैं जहाँ इस्पात उत्पादन के लिए प्राकृतिक साधनों की कमी है, आज विष्व के बड़े इस्पात उत्पादक देश बने हुए हैं। जापान उनमें से एक ऐसा

ही राष्ट्र है जो आज विष्व में दूसरा बड़ा इस्पात उत्पादक है। लोह एवं इस्पात के उत्पादन की दृष्टि से भारत के पास आवश्यक कच्चे माल एवं अन्य प्राकृतिक साधनों की कमी नहीं है। किन्तु तकनीकी जानकारी एवं पूँजी की कमी के कारण इस देश में इस्पात निर्माण क्षमताओं का निर्माण समुचित रूप में नहीं हो सका। जहाँ तक प्रति व्यक्ति इस्पात की खपत का प्रश्न है भारत में यह केवल 14 कि. ग्रा. है, जबकि संयुक्त राज्य अमरीका में यह 685 कि. ग्रा. सोवियत रूस में 428 कि. ग्रा. तथा ब्रिटेन में 422 कि. ग्रा. है। ये तथ्य इस बात के प्रमाण हैं कि इस्पात उद्योग की दृष्टि से भारत की स्थिति विष्व में अभी बहुत ही निम्न स्तर पर है।¹

लाभदायकता की अवधारणा

किसी निवेश द्वारा अपने उपयोग से आय अर्जित करने की शक्ति लाभदायकता है। मेग्स जॉनसन तथा मेग का कथन है कि किसी व्यवसाय द्वारा अपने ऋण के भुगतान की शक्ति तथा लाभांश भुगतान की वृद्धि, उसके आय अर्जित करने की क्षमता पर निर्भर है। इस प्रकार आय का परिमाण विक्रय मूल्यों, बिक्रीत इकाइयों की संख्या, स्थायी लागत, चरों (वेरियेबल्स) की मात्रा तथा बिक्रीत विभिन्न उत्पादों पर निर्भर है। इन सभी चरों का उपयोग लागत तथा आय सम्बन्धी के विश्लेषण में किया जाता है तथा विभिन्न धारणाओं और प्रबंधन की नीतियों के अन्तर्गत किसी व्यवसाय की लाभदायकता प्रकट करने के लिये किया जाता है। सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

प्रस्तुत शोधपत्र से सम्बन्धित महत्वपूर्ण शोध अध्ययनों का गहन अध्ययन किया गया जिनमें से प्रमुख शोध अध्ययन निम्नलिखित हैं –

गुप्ता, एस. एल. द्वारा प्रस्तुत अप्रकाशित शोध प्रबन्ध “हरियाण राज्य के चयनित सार्वजनिक उपक्रमों का वित्तीय प्रबन्ध” में सार्वजनिक उपक्रमों के वित्तीय प्रबन्ध का अध्ययन किया गया है। इसमें प्रमुखतः वित्तीय पद्धति एवं आय प्रबन्धन को सम्मिलित किया गया है। अध्ययन में सम्पत्तियों के उपयोग एवं वित्त स्रोतों पर प्रकाश डाला गया है और यह स्पष्ट किया गया है कि कोषों का दुरुपयोग किस प्रकार सार्वजनिक उपक्रमों के लिए हानिकारक है।

गुप्ता, प्रदीप कुमार द्वारा प्रस्तुत अप्रकाशित शोध प्रबन्ध “मध्य प्रदेश के कागज उद्योग में आय का प्रबन्ध”, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, वर्ष 1993 के अन्तर्गत मध्यप्रदेश के सभी कागज उद्योग में आय का विश्लेषण, लाभांश नीति का अध्ययन, लाभों का पुनर्विनियोजन, ह्रास नीति का विश्लेषणात्मक, अध्ययन कर प्रबंधक वर्ग को महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये हैं।

अग्रवाल, हरीश कुमार द्वारा प्रस्तुत अप्रकाशित शोध प्रबन्ध “मध्य प्रदेश के सार्वजनिक उपक्रमों में लाभ-प्रबन्धन एक विश्लेषणात्मक अध्ययन”, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, वर्ष 1997 के अन्तर्गत मध्यप्रदेश के सार्वजनिक उपक्रम के लाभ प्रबन्धन, अवक्षयण नीति, संचय कोष, लाभांश नीति एवं लाभों का पुनर्विनियोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर प्रबंधक वर्ग को महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये हैं।

गोयल, आर. एन. ने अपने अप्रकाशित शोध प्रबन्ध “डेपरीशियेसन पॉलिसीज एण्ड प्रेक्टिस इन इण्डियन इण्डस्ट्रीज”, दिल्ली विश्वविद्यालय, वर्ष 1976 के अन्तर्गत भारत की चयनित इकाइयों में ह्रास नीति का अध्ययन किया है। इन्होंने अपने अध्ययन में देश की प्रमुख औद्योगिक इकाइयों में मूल्य ह्रास के लिए अपनाई जाने वाली विभिन्न नीतियों का आलोचनात्मक विवरण प्रस्तुत किया है। साथ ही मूल्य ह्रास के विभिन्न सम्पत्तियों के वित्त प्रबन्धन एवं आन्तरिक वित्त प्रबन्धन में भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत किया।

जैन, एस. सी. ने अपने प्रकाशित शोध प्रबंध “फायनेन्सियल मैनेजमेन्ट ऑफ इण्डियन इण्डस्ट्रीज (ए केस स्टडी ऑफ ऑटोमोबाइल इण्डस्ट्रीज इन इण्डिया), प्रतीक्षा प्रकाशन जयपुर, वर्ष 1986 के अन्तर्गत भारतीय उद्योगों के वित्तीय प्रबन्ध का अध्ययन किया है इसमें भारत के ऑटोमोबाइल उद्योग में वित्तीय प्रबन्ध के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया गया है तथा इन उद्योग की प्रमुख वित्तीय समस्याओं एवं उनके सामाधान पर प्रकाश डाला गया है।

कुलश्रेष्ठ, एन. के. ने अपने अध्ययन "भारत के कागज उद्योग में वित्तीय विवरण का विश्लेषण", प्रकाशित शोध प्रबन्ध, नवमान प्रकाशन, अलीगढ़, वर्ष 1988, में भारत के कागज उद्योग की चयनित इकाइयों के वित्तीय विवरणों का विश्लेषण किया है। अध्ययन में मुख्यतः लाभदायकता, प्रत्याय दर, वित्त के स्रोत, स्थायी एवं कार्यशील पूँजी का गहन विश्लेषण किया गया है।

मेहरोत्रा, एस. सी. द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन "मैनेजमेन्ट ऑफ अर्निंग्स इन इण्डियन कम्पनीज", अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा, वर्ष 1962, में देश की प्रमुख लोहा एवं इस्पात, सीमेन्ट सूती वस्त्र, कागज एवं जूट उद्योग में आय के प्रबंध का विश्लेषण किया गया है। साथ ही उन्होंने अपने शोध अध्ययन में आय की समस्या एवं उनके नियोजन से संबंधित प्रमुख सुझाव भी प्रस्तुत किये हैं।

नागपाल, वी. पी. द्वारा प्रस्तुत अप्रकाशित शोध प्रबन्ध "फायनेन्सियल मैनेजमेंट इन सिलेक्टेड पब्लिक इंटरप्रइजेज ऑफ हरियाणा", आगरा विश्वविद्यालय, आगरा, वर्ष 1989, में हरियाणा राज्य के चयनित सार्वजनिक उपक्रमों के वित्तीय प्रबन्ध का अध्ययन किया है तथा उन्होंने अपने शोध प्रबन्ध में उनके प्रभावी वित्तीय प्रबन्ध के लिये व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत किये हैं।

ठाकुर, के. एस. ने अपने अध्ययन "म. प्र. के सार्वजनिक उपक्रमों में वित्तीय प्रबन्ध", अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, वर्ष 1990, में मध्यप्रदेश के चयनित 7 सार्वजनिक उपक्रमों में वित्तीय प्रबन्ध का अध्ययन किया है, जिसमें से प्रमुख रूप से कार्यशील पूँजी का प्रबन्ध, स्थायी सम्पत्तियों का प्रबन्ध, आय का प्रबन्ध तथा उपक्रमों के वित्तीय प्रशासन एवं नियंत्रण का गहन अध्ययन किया गया है। शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. भारत के लोहा एवं इस्पात उद्योग की चयनित इकाइयों की लाभदायकता का गहन विश्लेषण करना।

2. लाभदायकता में कमी के कारणों को ज्ञात करना तथा लाभदायकता में वृद्धि हेतु महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र विवरणात्मक शोध अध्ययन पर आधारित है। भारत के लोहा एवं इस्पात उद्योग की 107 इकाइयों स्टॉक एक्सचेंज में सूचीकृत हैं। सुविचार पद्धति के आधार पर 4 इकाइयों चयनित की गयी है। उक्त इकाइयों चयनित करने में सुविचार निदर्शन का प्रयोग किया गया है। लोहा एवं इस्पात उद्योग की इकाइयों में विनियोजित पूँजी को चयन का आधार मानते हुए 100 करोड़ से अधिक पूँजी विनियोजन वाली इकाइयों का चयन किया गया है। तथा शोध अध्ययन के क्षेत्र को 7 वर्ष 2003-04 से 2009-10 तक सीमित रखा गया है।

चयनित इकाइयों अग्रलिखित हैं—

1. स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
2. इस्पात इण्डस्ट्रीज
3. टाटा स्टील
4. जे. एस. डब्ल्यू स्टील

प्रस्तुत शोध अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक संमको पर आधारित है इस हेतु चयनित इकाइयों के वार्षिक प्रतिवेदन, इंटरनेट से एकत्रित किये गये हैं। लाभदायकता विश्लेषण हेतु सकल लाभ अनुपात, शुद्ध लाभ अनुपात, संचालन लाभ अनुपात, विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय की दर, दीर्घकालीन कोष पर प्रत्याय की दर का उपयोग किया गया है। संगणित अनुपातों को विभिन्न तालिकाओं में व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया गया है, तथा उनके आधार पर लाभदायकता का गहन विश्लेषण किया गया है।

लाभदायकता विश्लेषण हेतु उपयोग किये गये अनुपातों का सक्षिप्त विवरण

1. सकल लाभ अनुपात

शुद्ध बिक्री और बेची गयी वस्तु की लागत का अन्तर (कुल लाभ) बहुत ही महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यह शुद्ध बिक्री पर कुल लाभ के उपान्त को प्रदर्शित करता है। कुल लाभ का उपान्त इतना पर्याप्त होना चाहिए कि संचालन व्यय तथा अन्य व्यय को पूरा करने के बाद भी बिक्री व स्वामी इक्विटी की तुलना में शुद्ध आय पर्याप्त हो। कुल लाभ उपान्त का विप्लेषण करने के लिए कुल लाभ अनुपात या बिक्री पर कुल लाभ का उपान्त अनुपात की गणना की जाती है। इसे ज्ञात करने का सूत्र इस प्रकार है –

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \frac{\text{सकल लाभ} \times 100}{\text{शुद्ध विक्रय}}$$

सामान्यतया यह अनुपात जितना ही ऊँचा होता है उतना ही अच्छा माना जाता है। यह अनुपात जितना कम होता है, संस्था की लाभदायकता उतनी ही कम मानी जाती है।²

2. शुद्ध लाभ अनुपात

यह अनुपात शुद्ध लाभ एवं शुद्ध विक्रय के सम्बन्ध को प्रतिशत में व्यक्त करता है। सकल लाभ में से अप्रत्यक्ष व्ययों को घटाकर शुद्ध लाभ की गणना की जाती है इसका सूत्र निम्न प्रकार है –

$$\text{शुद्ध लाभ अनुपात} = \frac{\text{शुद्ध लाभ} \times 100}{\text{शुद्ध विक्रय}}$$

यह अनुपात जितना ही अधिक ऊँचा होता है उतना ही अच्छा माना जाता है।³

3. संचालन लाभ अनुपात

यह अनुपात संचालन लाभ व शुद्ध विक्रय के मध्य सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है, इसका सूत्र निम्न प्रकार है।

$$\text{संचालन लाभ अनुपात} = \frac{\text{संचालन लाभ} \times 100}{\text{शुद्ध विक्रय}}$$

संचालन लाभ निकालने के लिए शुद्ध लाभ में गैर संचालन व्ययों को जोड़ा जाता है तथा गैर संचालन आयों को घटाया जाता है। जबकि सकल लाभ से संचालन लाभ निकालने के लिए सकल लाभ में संचालन आय को जोड़ते हैं तथा संचालन व्ययों को घटाते हैं।⁴

4. विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय की दर

किसी भी व्यवसाय में विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय की दर महत्वपूर्ण माप है। विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय की दर एक ओर व्यवसाय की सम्पूर्ण कार्यक्षमता को प्रकट करती है, दूसरी ओर व्यवसाय में प्रयोग हेतु उपलब्ध पूँजी को भी बताती है।

इसे ज्ञात करने का उद्देश्य यह है कि व्यवसाय की सम्पत्तियों के प्रत्येक रूपये पर उत्पाद की दर पूँजी सम्पत्ति अनुपात की तुलना में कितनी है। उच्च प्रत्याय दर सक्षम प्रबन्ध को बताती है, इसके विपरीत निम्न प्रत्याय दर प्रबन्ध की अक्षमता को प्रकट करती है। यहाँ शुद्ध आय से तात्पर्य उद्योग के लाभ-हानि लेखे के शुद्ध लाभ से है। तथा पूँजी कोष से तात्पर्य उद्योग की प्रदत्त पूँजी तथा संचय से है तथा कुल सम्पत्ति से आषय उद्योग की कुल सम्पत्ति से है।

शुद्ध लाभ अनुपात के आधार पर निकाला गया निष्कर्ष भ्रामक भी हो सकता है। यह बहुत ही सम्भव है कि बिक्री की तुलना में शुद्ध संचालन का लाभ पर्याप्त हो, परन्तु लगायी गयी पूँजी की तुलना में बिक्री की मात्रा अपने आप में कम हो। अतः संस्था को पूर्ण लाभदायकता की जाँच करने के लिए यह आवश्यक होता है कि विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय की गणना की जाये।

यहाँ पर केवल गणना विधि को ही बताया गया है। पुनश्च इस अनुपात की गणना के लिए लगायी गयी पूँजी का निम्न अर्थों में प्रयोग किया जा सकता है।

1. कुल पूँजी का कुल साधन या कुल सम्पत्ति
2. शुद्ध लगायी गयी पूँजी जो कुल सम्पत्ति-चालू दायित्वों के बराबर होता है।
3. अंशधारियों की पूँजी या फण्ड या स्वामित्व फण्ड या शुद्ध मूल्य जो कुल सम्पत्ति-कुल सम्पत्तियों के बराबर होता है।

इस अनुपात के गणना सूत्र निम्नलिखित हैं –

$$\text{कुल संसाधनो पर प्रत्याय} = \frac{\text{कर के पूर्व लाभ} \times 100}{\text{कुल सम्पत्ति}}$$

$$\text{नियोजित पूँजी पर प्रत्याय} = \frac{\text{कर के पूर्व लाभ} \times 100}{\text{नियोजित पूँजी}}$$

$$\text{अंशधारी कोष पर प्रत्याय} = \frac{\text{कर के पश्चात् लाभ} \times 100}{\text{अंशधारी कोष}}$$

4. दीर्घकालीन कोष पर प्रत्याय की दर

यह अनुपात व्यवसाय के दीर्घकालीन निवेश पर प्रत्याय ज्ञात करने हेतु संगणित किया जाता है। दीर्घकालीन कोष में अंशधारी कोष तथा दीर्घकालीन ऋणों को सम्मिलित किया जाता है तथा ब्याज के पूर्व लाभ को प्रत्याय माना जाता है। इस अनुपात का गणना सूत्र निम्नलिखित है-

$$\text{दीर्घकालीन कोष पर प्रत्याय दर} = \frac{\text{ब्याज के पूर्व लाभ} \times 100}{\text{दीर्घकालीन कोष}}$$

लाभदायकता विश्लेषण

तालिका क्रमांक 1

भारत में चयनित लोहा एवं इस्पात इकाईयों में सकल लाभ अनुपात

क्र.	कम्पनी का नाम	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
1.	स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लि.	17.89	36.09	24.12	29.94	25.10	17.48	19.40
2.	इस्पात इण्डस्ट्रीज	6.92	15.84	(11.02)	7.96	7.55	5.76	5.88
3.	टाटा स्टील	31.65	40.17	38.81	39.84	37.70	33.69	31.36
4.	जे. एस. डब्ल्यू. स्टील	20.06	28.26	22.41	28.55	23.43	14.51	17.33

उपर्युक्त तालिका का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि भारतीय लोहा एवं इस्पात कम्पनियों में वित्तीय वर्ष 2004-05 में सकल लाभ अनुपात की स्थिति सर्वाधिक उच्च थी किन्तु वित्तीय वर्ष 2008-09 में 71.44 सर्वाधिक न्यून स्थिति को दर्शाता है। वित्तीय वर्ष 2005-06 में इस्पात इण्डस्ट्रीज का सकल लाभ अनुपात ऋणात्मक रहा है। टाटा स्टील के अनुपातों में सर्वाधिक उच्च स्थिति की प्रवृत्ति पायी गई।

तालिका क्रमांक 2

An International Multidisciplinary Research e-Journal

भारत में चयनित लोहा एवं इस्पात इकाईयों में शुद्ध लाभ अनुपात

क्र.	कम्पनी का नाम	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
1.	स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लि.	11.39	23.19	13.79	17.38	18.16	13.40	15.73
2.	इस्पात इण्डस्ट्रीज	1.18	11.24	(15.99)	(0.12)	0.41	(8.24)	(3.14)
3.	टाटा स्टील	16.00	23.72	22.78	23.53	23.43	21.09	19.96
4.	जे. एस. डब्ल्यू. स्टील	16.05	13.00	14.14	14.98	14.92	3.23	11.09

सारणी से स्पष्ट होता है कि शुद्ध लाभ अनुपात की स्थिति वित्तीय वर्ष 2004-05 को छोड़कर शेष अवधि में कम रही है। जिसका मुख्य कारण इस्पात इण्डस्ट्रीज की स्थिति का ऋणात्मक होना है। स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड की स्थिति का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि चयनित अवधि में कम्पनी में शुद्ध लाभ अनुपात की स्थिति 11 से 23 प्रतिशत के बीच रही है। जबकि टाटा स्टील की स्थिति का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि कम्पनी में चयनित अवधि में प्रस्तुत अनुपात की स्थिति 16 से 24 प्रतिशत रही है। जे. एस. डब्ल्यू. स्टील में यह 3 से 15 प्रतिशत के बीच रही है।

तालिका क्रमांक 3

भारत में चयनित लोहा एवं इस्पात इकाईयों में संचालन लाभ अनुपात

क्र.	कम्पनी का नाम	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
1.	स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लि.	20.71	36.53	23.24	28.09	28.19	20.41	22.69
2.	इस्पात इण्डस्ट्रीज	15.55	24.58	7.04	21.23	15.18	13.58	13.47
3.	टाटा स्टील	32.47	41.10	38.88	39.61	41.94	37.68	35.70
4.	जे. एस. डब्ल्यू. स्टील	31.69	34.83	27.79	32.79	29.46	20.42	23.52

तालिका के विश्लेषण के अध्ययन के उपरान्त कहा जा सकता है कि भारत में लोहा एवं इस्पात उद्योग में संचालन लाभ अनुपात वित्तीय वर्ष 2004-05 में चयनित कम्पनियों में सर्वाधिक वृद्धि की स्थिति को दर्शाता है, वित्तीय वर्ष 2005-06 में अनुपात घट कर 96.95 प्रतिशत रहा। जबकि वित्तीय वर्ष 2006-07, 2007-08 में इसकी स्थिति में सुधार हुआ, किन्तु 2008-09 एवं 2009-10 में अनुपात की स्थिति में कमी दर्ज की गई। संचालन लाभ अनुपात में टाटा स्टील की स्थिति अच्छी रही है, जबकि इस्पात इण्डस्ट्रीज के संचालन लाभ अनुपात में गिरावट दर्ज की गई है।

तालिका क्रमांक 4

भारत में चयनित लोहा एवं इस्पात इकाईयों में विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय की दर

क्र.	कम्पनी का नाम	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
1.	स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लि.	24.98	61.29	35.85	44.94	44.03	27.61	20.46
2.	इस्पात इण्डस्ट्रीज	4.43	13.63	(1.89)	10.05	7.31	6.69	8.27
3.	टाटा स्टील	38.77	56.06	43.72	27.71	17.11	15.01	13.06
4.	जे. एस. डब्ल्यू स्टील	10.71	27.46	14.68	22.89	18.76	11.53	15.08

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि भारत में चयनित लोहा एवं इस्पात इकाईयों में वर्ष 2004-05 में पूँजी पर प्रत्याय की दर सर्वाधिक उच्च 158.44 प्रतिशत रही। वर्ष 2005-06 में यह घटकर 92.36 प्रतिशत हो गई। जिसका मुख्य कारण सभी कम्पनियों के अनुपात में गिरावट आना था जो इस्पात इण्डस्ट्रीज में सबसे अधिक -1.89 प्रतिशत थी। वित्तीय वर्ष 2006-07 में यह बढ़कर 105.59 प्रतिशत हो गई, शेष वित्तीय वर्षों में इसमें निरन्तर गिरावट की स्थिति रही।

तालिका क्रमांक 5

भारत में चयनित लोहा एवं इस्पात इकाईयों में दीर्घकालीन कोष पर प्रत्याय की दर

क्र.	कम्पनी का नाम	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
1.	स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लि.	28.27	63.24	36.75	45.55	44.47	28.98	21.97
2.	इस्पात इण्डस्ट्रीज	4.71	14.83	(1.98)	10.71	7.66	7.09	8.55
3.	टाटा स्टील	39.43	56.78	43.93	28.11	17.16	15.21	13.06
4.	जे. एस. डब्ल्यू स्टील	11.67	29.00	15.47	23.60	19.22	12.35	15.12

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारत में चयनित लोहा एवं इस्पात इकाईयों में स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड में वर्ष 2003-04 में दीर्घकालीन कोष पर प्रत्याय की दर 28.27 प्रतिशत थी जो कि वर्ष 2004-05 में बढ़कर 63.24 प्रतिशत, 2005-06 में 36.75, 2006-07 में 45.55, 2007-08 में 44.47 हो गई तथा वर्ष 2008-09 व 2009-10 में पुनः इसमें कमी आई और यह घटकर क्रमशः 28.98, 21.97 प्रतिशत हो गई। इस्पात इण्डस्ट्रीज लिमिटेड में वर्ष 2005-06 में दीर्घकालीन कोष पर प्रत्याय की दर में ऋणात्मक -1.98 प्रतिशत रहा जो चयनित अवधि में सबसे कम रही तथा सबसे अधिक वित्तीय वर्ष 2006-07 में सबसे अधिक 10.71 प्रतिशत रही। टाटा स्टील लिमिटेड में वर्ष 2003-04 में विनियोजित कोष पर प्रत्याय की दर 39.43 प्रतिशत है। जबकि अध्ययन अवधि में सर्वाधिक प्रत्याय की दर वर्ष 2004-05 में 56.78 प्रतिशत रही। वर्ष 2009-10 में घटकर यह प्रतिशत 13.06 प्रतिशत रही जो चयनित अवधि में सबसे कम थी। जे. एस. डब्ल्यू स्टील लिमिटेड में वर्ष 2003-04 में प्रत्याय की दर 11.67 प्रतिशत रही, जबकि वर्ष 2004-05 में यह प्रतिशत 29.00 रही, वर्ष 2008-09 तथा 2009-10 में यह प्रतिशत क्रमशः 12.35 तथा 15.12 प्रतिशत रही।

निष्कर्ष, समस्याएँ एवं सुझाव

उपर्युक्त तालिकाओं का विश्लेषण करने के पश्चात् ज्ञात होता है कि चयनित लोहा एवं इस्पात उद्योग में इस्पात इण्डस्ट्रीज में सकल लाभ अनुपात में सर्वाधिक कमी रही, 2005-06में इस्पात कम्पनी का अनुपात ऋणात्मक भी रहा। इससे ज्ञात होता है कि कम्पनी की लाभदायकता स्थिति ठीक नहीं है, शेष सभी तीनों कम्पनियों के सभी लाभदायकता अनुपात सम्पूर्ण अध्ययन अवधि में सकारात्मक स्थिति को दर्शाते हैं। जिसमें टाटा स्टील के अनुपात में सर्वाधिक वृद्धि का प्रतिशत पाया गया है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि टाटा स्टील में लाभदायकता की स्थिति अन्य कम्पनियों की तुलना में उच्च स्थिति में है।

टाटा स्टील, जे. एस. डब्ल्यू. स्टील व स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड में शुद्ध लाभ की स्थिति सन्तोषजनक है। स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड के शुद्ध लाभ अनुपात में वित्तीय वर्ष 2005-06 में 9.4 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई जिसका कारण कम्पनी की कच्ची सामग्री की लागतों में वृद्धि होना था इस अवधि में कम्पनी की कच्ची सामग्री पर व्यय में 3511.49 करोड़ की वृद्धि हुई किन्तु शुद्ध विक्रय में 513.82 करोड़ की कमी हुई। इस अवधि में कम्पनी की ईंधन व शक्ति, कर्मचारी लागत, निर्माण लागत, विक्रय एवं प्रशासनिक व्यय व विविध व्ययों में वृद्धि रही। इस्पात इण्डस्ट्रीज के शुद्ध लाभ अनुपात का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि वित्तीय वर्ष 2005-06, 2006-07, 2008-09 व 2009-10 में कम्पनी के लाभ की स्थिति सन्तोषजनक नहीं रही क्योंकि उक्त वित्तीय वर्षों में कम्पनी का शुद्ध लाभ अनुपात ऋणात्मक स्थिति में रहा, जिसका कारण वर्ष 2005-06 में कम्पनी के विक्रय में कमी रही किन्तु कच्चे माल की लागतों में विक्रय के अनुपात में कमी नहीं हुई तथा कम्पनी अपने संचालन व्ययों पर भी नियन्त्रण नहीं रख सकी।

संचालन लाभ अनुपात की तालिका का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि सर्वाधिक वृद्धि टाटा स्टील में रही व सर्वाधिक कमी का प्रतिशत इस्पात इण्डस्ट्रीज में रहा। जे. एस. डब्ल्यू. स्टील व स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड की स्थिति भी सन्तोषजनक रही।

विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय की दर का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि प्रथम तीन वित्तीय वर्षों में तो टाटा स्टील के अनुपात उच्च स्थिति को दर्शाते हैं किन्तु अगले चार वित्तीय वर्ष में इसमें गिरावट जारी रही इसमें भी सर्वाधिक कमी इस्पात इण्डस्ट्रीज में दर्ज की गई स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड में इस अनुपात की स्थिति अन्य सभी कम्पनियों की तुलना में अच्छी रही।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड में दीर्घकालीन कोष पर प्रत्याय की दर 63.24 प्रतिशत वित्तीय वर्ष 2004-05 में सर्वाधिक अधिक थी तथा सबसे कम दर 1.98 प्रतिशत वित्तीय वर्ष 2005-06 में इस्पात इण्डस्ट्रीज में रही। टाटा स्टील में यह दर प्रथम तीन वित्तीय वर्षों में तो उच्च रही लेकिन अन्तिम चार वर्षों में इसमें निरन्तर कमी

दर्ज की गई। जे. एस. डब्ल्यू. स्टील में दीर्घकालीन कोष पर प्रत्याय की दर सामान्य रही।

भारत की चयनित लोहा एवं इस्पात इकाईयों में लाभ की न्यून स्थिति का प्रमुख कारण कम्पनी द्वारा अपने संचालन व्ययों तथा उत्पादन लागत पर नियन्त्रण नहीं रख पाना रहा है।

भविष्य में कम्पनियों को लाभ की स्थिति संतोषजनक करने के लिए कठोर वित्तीय नियन्त्रण द्वारा संचालन व्ययों को कम करना आवश्यक है साथ ही कर्मचारियों की संख्या पर नियन्त्रण व उत्पादन में वृद्धि करना आवश्यक है। इस्पात इण्डस्ट्रीज को इन व्ययों पर नियन्त्रण रखना अति आवश्यक है, जिससे कम्पनी की स्थिति में सुधार हो सके।

भारत की चयनित लोहा एवं इस्पात उद्योग में लाभदायकता वृद्धि हेतु निम्नलिखित महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत हैं -

An International Multidisciplinary Research e-Journal

1. चयनित लोहा एवं इस्पात इकाईयों में पर्याप्त मात्रा से अधिक रोकड़ शेष पाया गया है, जिसे नियमित रखना चाहिये। अतिरिक्त रोकड़ शेष को अल्पकालीन प्रतिभूतियों में विनियोजित करके आय में वृद्धि की जा सकती है।

2. चयनित लोहा एवं इस्पात इकाईयों में पूँजी बजटन प्रणाली का अनुकरण करना चाहिए जिससे लाभदायकता सुनिश्चित की जा सके। स्थायी सम्पत्तियों में विनियोग पूँजी बजटन के आधार पर होना चाहिए।

3. अध्ययन के दौरान पाया गया कि कम्पनियों द्वारा संचालन व्ययों पर नियन्त्रण नहीं रखा गया अतः लाभदायकता वृद्धि के लिए कठोर वित्तीय अनुशासन द्वारा इन व्ययों पर नियन्त्रण रखा जा सकता है।

4. चयनित लोहा एवं इस्पात इकाईयों में कर्मचारियों की संख्या अधिक है जिससे इस पर होने वाला व्यय भी अधिक मात्रा में हो रहा है। अतः प्रबन्धन को इसमें कमी के लिए उचित नितियों का पालन करना चाहिये।

5. कम्पनियों को नकद कोष की स्थिति में सुधार के लिये रोकड़ बजट तैयार करके नकदी कोषों का पूर्वानुमान लगा लेना चाहिए तथा अधिक रोकड़ शेष व कम रोकड़ शेष को सन्तुलित कर पर्याप्त नकद कोषों की मात्रा का निर्धारण करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जेम जमद इपह चतवकनबमते वजिममस तम नैणैण्णत्तश्रंचंद नैण |ण्णैपदंएँमेज ळमतउंदलए प्जंसलए थतंदबमए च्वसंदकए ळमबीवेसवआंपं+न्ज्ण
2. अग्रवाल, जे. के., अग्रवाल आर. के. एवं गुप्ता दिनेश, "प्रबन्धकीय लेखांकन", रमेश बुक डिपो, जयपुर-नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, वर्ष 2004-05, पृष्ठ 4.2
3. अग्रवाल, बी. पी. एवं मेहता, बी. के. "प्रबन्धकीय लेखांकन" साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि., वर्ष 2005, पृष्ठ 4.5
4. शर्मा एवं त्रिवेदी, "प्रबन्धकीय लेखांकन" देवी अहिल्या प्रकाशन, इन्दौर वर्ष 2006, पृष्ठ 129
5. श्रीवास्तव, आर. एम. : "वित्तीय प्रबन्ध", प्रगति प्रकाशन, मेरठ, द्वितीय संस्करण, वर्ष 1995, पृष्ठ 278
6. उवदमल बवदजतवसण बवउ